कलम की सुगंध
अर्णव कलश एसोसिएशन

गुल की कुण्डलियाँ

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

धनेश्वरी सोनी 'गुल'

गुल की कुण्डलियां

(कलम की सुगंध छंदशाला)

श्रीमती धनेश्वरी सोनी 'गुल'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-236-4
संपादक- अनिता मंदिलवार "सपना"
आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- डॉ. प्रीति समकित सुराना, 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, श्रीमती धनेश्वरी सोनी 'गुल'
मूल्य- 90.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY DHANESHWARI SONI GUL

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

गुल की कुण्डलियाँ करे, कितने यहाँ कमाल।
कहती सपना है यही, आप रहो खुशहाल।।

कलम की सुगंध छंदशाला के द्वारा समय समय पर छंद विधाओं पर शतकवीर आयोजन होता रहता है। इसके पहले दोहा, रोला, चौपाई, कुण्डलियाँ शतकवीर का सफल आयोजन हो चुका है। आगे भी कई विधाओं पर शतकवीर का आयोजन करने का विचार प्रस्तावित है। ये सभी आयोजन पटल के संस्थापक आदरणीय गुरू संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशन में संपन्न होते रहें है।

इस बार शतकवीर आयोजन में शामिल रचनाकारों की सौ कुण्डलियों को पुस्तक रूप देने की योजना आदरणीय संजय कौशिक विज्ञात जी के निर्देशानुसार कलम की सुगंध ने अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन के सौजन्य से प्रकाशित करने की योजना बनाई। आदरणीया प्रीति सुराना जी ने सहर्ष स्वीकार किया। हम उनके बहुत आभारी हैं।

इसी क्रम में आदरणीया धनेश्वरी सोनी "गुल" जी का एकल संग्रह "गुल की कुण्डलियाँ" प्रकाशन में है। सर्वप्रथम आदरणीया "गुल" जी को हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाइयाँ। आदरणीया धनेश्वरी जी की साहित्य साधना अनवरत जारी है। कुण्डलियाँ जैसे कठिन छंद विधा पर सतत कलम चलना आपकी साहित्यिक सृजनात्मक ता का परिचायक है।

माँ शारदे की कृपा से आपकी लेखनी नई यात्रा तय कर अपनी निर्धारित मंजिल को अवश्य प्राप्त करेगी।

मुख्य संचालिका
अनिता मंदिलवार सपना
कलम की सुगंध छंदशाला

समीक्षा

गुल की बगिया लेखनी, शब्दो का भंडार।।
सीख भरी कविता लिखी, मिलता ज्ञान अपार।।

सपना तो सभी लेते हैं और जब सपना पूरा हो जाता है तो उसकी खुशी हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते हैं। श्रीमती धनेश्वरी सोनी "गुल" जो बिलासपुर से है, एक कुशल गृहिणी, रचनाकारा और एक प्रसिद्ध कवियत्री हैं। आप की अनेक सांझा संकलन प्रकाशित हुई हैं। आपकी लेखनी हर विधा में चली है और आप समय-समय पर साहित्य के क्षेत्र में कुछ न कुछ योगदान करती रहीं हैं।

आप 'सारस्वत सम्मान', 'दोहा विशारद सम्मान', 'श्रेष्ठ लघु कथा सृजक सम्मान', 'कलमकार सम्मान', 'कविता सम्मान', 'विशिष्ट प्रवक्ता सम्मान', 'वीणापाणी सम्मान', 'चाणक्य सम्मान' आदि सम्मानों से सम्मानित होती रही हैं। आप स्वर कोकिला हैं और आकाशवाणी से आप की कविताएं प्रसारित होती रही है।

आपने जीवन के हर पहलू पर कुंडलियाँ लिखी। महिलाओं को आप विशेष महत्व देती हैं और महिला होने के नाते आपने अपनी कुंडलियों में वेणी, कुमकुम, गजरा, काजल, पायल, बिछिया, डोली को कुंडलियाँ में सुशोभित किया है। माँ का आंचल बहुत सुंदर शब्दों में बहुत अच्छे तरीके से आपने कुंडलियों में पिरोया है। इसके अलावा धनेश्वरी जी ने सीता राम का सुंदर चित्रण साजन कुंडली में किया है
बाती में आप कहती हैं
बाती डालो तेल में, दीपक संग बिठाया।
दीपक जलने जब लगे, भगवन दीप दिखाया।।
नाटककार कुंडली तारीफ ए काबिल है
पायल का बखान आपने शिव गौरा के माध्यम से बहुत सुंदर किया है
आप ईश्वर में भी विश्वास करती हैं।
सबका मालिक एक है, जपते भजते राम।
प्रोत्साहन भी आप बहुत अच्छा करती हैं
आगे बढ़ते वो सदा, करे वही श्रम खास।
मौन करे फरियाद बहुत बढ़िया कुंडलियां लगी
आप भी मीठी बोली बोलने का संदेश पाठकों तक भेज रहीं हैं। कान्हा की चितवन और तिरछी भौहों का ज़िक्र भी आपने बखूबी अपनी लेखनी से सुशोभित किया है। शब्दों का चयन बहुत सुंदर है। साहित्य में आपकी रुचि देखते बनती है। आप कामना करती हैं कि सबको जीवन में खुशियाँ मिले और यही कारण है कि आप भी सदा खुश रहती हैं। आपने राधा के रूप को अपनी कुंडलियों में स्थान देकर अपनी पुस्तक को भी धन्य कर दिया। नारी को आपने साहस से भरी बता कर मान बढ़ाया है। पीहर हर बेटी को आजन्म अच्छा लगता है। वह हमेशा पीहर की कुशलता की प्रार्थना करती है। आप प्यार के साथ मोह पर अंकुश रखने की बात भी करती हैं।

आदरणीया मैं राधा तिवारी 'राधेगोपाल 'ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि आपके हर सपने जीवन में पूरे हो।आपकी और भी बहुत सारी पुस्तकें प्रकाशित होती रहे। आप दीर्घायु हो।

मधु रस जैसे है भरी, पाठक पढ़ खुशहाल।।
भाव भरे है लेखनी, अच्छी होती ख्याल।।

राधा तिवारी "राधेगोपाल"
खटीमा, उधम सिंह नगर उत्तराखंड

शुभकामना संदेश

प्रिय धनेश्वरी सोनी "गुल" जी,

कलम की सुगंध पर आपकी सशक्त कलम अनेक छंद विधाओं पर निरन्तर नियमित सृजन करती आ रही है। कुण्डलियाँ का शतक सृजन करने जैसी विशेष उपलब्धि और उसके पश्चात आपका यह एकल संग्रह आपकी छंद विधा पर समझ और सतत श्रम का परिचायक है। यह संग्रह 'गुल की कुण्डलियाँ' विभिन्न विषयों को समेटे हुए एक अनुपम और अनोखा संग्रह है। पाठक वर्ग इसे पढ़ते हुए अनेक रसों का स्वाद चखकर निश्चय ही आनंद प्राप्त करेगा। यह उपलब्धि आपको भी जीवन भर आनंद की अनुभूति देती रहेगी और इस प्रकार से आप सैकड़ों संग्रह प्रकाशित करवाकर शुद्ध साहित्यकार के रूप में विशेष स्थान प्राप्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ आपको ढेरों बधाई एवं मंगलकामनाएं....!

संजय कौशिक 'विज्ञात'
संस्थापक
कलम की सुगंध

शुभकामना संदेश

प्रिय धनेश्वरी सोनी गुल

नूतन संवतसर् खिले, सेमल और पलाश।
शोभा इनकी ताककर, प्रभु आए महि पास।
शुभ अवसर नवरात्र का, रचना है शत अष्ट।
खिलेंगी गुल की बगियाँ, पुस्तक होगी श्रेष्ठ।
नूतन संवत आज है, सतहत्तर दो हजार।
प्रथम दिवस सो है, खुशीयों की बहार।
कुण्डलिनी उपहार है, रचना शताधिक अष्ट।
गुल की बगिया काव्य है, शब्द सुमन है श्रेष्ठ।
रचना है मकरंद सम, भंवर ये पाठकवृन्द।
समालोचक गुरूजन हैं, मार्जन करें कविन्द।
प्रस्तुत करती गुल इसे, धनेश्वरी है नाम।
क्षमा करें गलती सभी, अश्रुपूर्ण अभिराम।

कमल की ताकत कलमकार में होती है,यह पहले मैं सुना करता था। आज मैंने अनुभव किया है यह ताकत रचनाकार की मेहनत अथक परिश्रम, जिजिविषा, लगन, समयदान, विज्ञ गुरूजन के मार्गदर्शन एवं सतत् परिमार्जन का परिणाम होता हैं। निसंकोच रुप से यह कहना चाहता हूँ कि इसके अतिरिक्त दैवीय कृपा एवं गुरजनों का आशीर्वाद, परिवार, मित्रों की शुभकामनाएं सबका अप्रत्यक्ष, प्रत्यक्ष सहयोग भी महत्वपूर्ण होता है।

इस कृति के प्रकाशन पर मै अभीभूत हूँ और मेरी शुभकामनाएं है, विश्वास है कि यह रचनात्मक साहित्य कलमकारा गुलजी जो मेरी सहचरी हैं उनके व्यक्तित्व एवं साहित्य साधना पथ की परिचायक होने में मील का पत्थर साबित होगी।

शुभकामनाओं के साथ
शत्रुहन कुमार सोनी

कवियत्री की कलम से

नाता भावों का रखो, रखो शब्द का मान।।
सपना विज्ञातजी मिलें, दिये छंद का ज्ञान।।
दिये छंद का ज्ञान, बनें हम छंदों ज्ञाता।
लिखें सदा हम सार, भाव से भरकर होता।।
सोच लिखो हरबार, बनें हम छंद विधाता।।
कहती गुल यह सार, रखों भावों से नाता।।

"बड़ी खुशी की बात है कि आज अंतराशब्द शक्ति प्रकाशन के माध्यम से "गुल की कुण्डलियाँ" पुस्तक एकल संग्रह प्रकाशित होने जा रहा है। जो छंदबद्ध दोहा रोला से समावेशित होगा। जिसमें 105 कुण्डलिनीयाँ होंगी जिसे रचकर मै अपने आपमें गौरवान्वित हूँ माँ शारदे की कृपा से यह संभव हो पाया मै माँ शारदे के चरणों में कोटि कोटि बंदन करती हुँ। इस छंद साधना में मैने समय दिया और निखरने के लिये अनवरत प्रयासरत रही। जिसमें सपना जी चमेलीजी, धरा, निषाद सर सभी विज्ञजनों के सहयोग से मैं यह कठिन छंद लिखने में पारंगत हो पायी। मेरी मेहनत सफल होगी जब पाठक तक पहुँकर कानों में मिश्री घोल दे और मनको मुग्ध करदे और आशीष मिले कि मेरी लेखनी अनवरत चलती रहे और मेरी यात्रा गुल की लेखनी से गुल की बगियाँ में सदा शब्द फूल खिलते रहें।

गुल की लेखनी जब चले, चलती ही वह जाय।।
गुल की बगियाँ में सदा, शब्द फूल भर आय।।
पढ़ के पाठक जब झुमें, होंठ सदा मुस्काय।।
रसभर जो रसना मिले, पाठक मन हर्षाय।।

आप सभी की शुभकामनाओं और आशीर्वाद के साथ..................!

आपकी अपनी

धनेश्वरी सोनी 'गुल'

बिलासपुर

1.

हिन्दी

बानी हिंदी बोलते, बोले भारत लोग।
जन-जन भाषा है यही, सभी करें उपयोग।।
सभी करें उपयोग, पढे जब हितकर हिंदी।
सरल सहज यह भाष, लगे इस पर भी बिंदी।।
बावन आखर जान, पढे जो साक्षर ज्ञानी।
कहे करजोरी गुल, बोल सब हिंदी बानी।।

2.

अविरल

अविरल हो ये लेखनी, कभी थमे मत हाथ।
करे साहित्य साधना, हर पल देती साथ।।
हर पल देती साथ, लिखे जो दोहा रोला।
गद्य पद्य लिख लेख, अलंकृत अक्षर बोला।।
कवि मन सोचे सार, लिखे वह लेखन अविचल।
कहे कलम गुल देख, बहे सुरधारा अविरल।।

3.

सागर

नदियाँ सागर से मिले, लहरें हिले अपार।
गंगा मर्यादा रखें, सागर करता प्यार।।
सागर करता प्यार, चाँद छवि देखा रोया।
तटों की सुनों पुकार, नदी ने आपा खोया।।
सागर रखता सोच, मिलन नद से हैं सदियाँ।
जग कहती गुल आज, धरा में पावन नदियाँ।।

4.

धड़कन

धड़कन आज सुना रही, प्यारे तेरे बोल।
पास दिलों रहते सदा, सबसे तुम अनमोल।।
सबसे तुम अनमोल, लगे है साजन प्यारा।
सजनी पहनी हार, दिखे ज्यों दिन में तारा।।
सजके रहती नार, पहनती सुंदर लटकन।
खुशबू महके द्वार, चले है साँसों धड़कन।।

5.

अनुपम

अनुपम सुंदरता धरे, कान्हा है चितचोर।
गोरी लगती राधिका, निकला चंदा भोर।।
निकला चंदा भोर, तजे देखो अँधियारा।
खड़ी राधिका पास, निहारे कान्हा प्यारा।।
ओढ़े चुनरी लाल, राधिका लगती निरुपम।
कहे हाथ गुल जोड़, दिखे गोपाला अनुपम।।

6.

वीणा

वीणा पाणी शारदे, नमन करूँ कर जोर।
ऊबुद्धि दिला दो माँ मुझे, मिले ज्ञान साभोर।।
मिले ज्ञान सा भोर, करूँ माँ श्रद्धा पूजन।
सुनो गीत लय ताल, करूँ धुन में अब कीर्तन।।
शीत गीत जब सून, लगा है गाने कृष्णा।
सुनो मातु झंकार, बजाती सुन्दर वीणा।।

7.

नैतिक

नैतिक जीवन सब रखो, भाव हों मूल्यवान।
सदाचार मानें सभी, मानव वही सुजान।।
मानव वही सुजान, तभी वह पूजा जाता।
रहे अच्छे विचार, सभी से उनका नाता।।
नैतिक जीवन साथ, रखे जो भौतिक भौमिक।
रहे विधा हर पाथ, वही हैं बनते नैतिक।।

8.

भारत

भारत प्यारा है हमें, रहते हम इस धाम।
रहे उम्र भर सब यहाँ, करें वतन के नाम।।
करें वतन के नाम, करों वीरों की पूजा।
रहते मिलकर लोग, लगे क्यों कोई दूजा।।
चुने हम नया काम, बनो मजबूत इमारत।
जन्में भगवन राम, वही कर्मभूमि भारत।।

9.

विजयी

विजयी भारत ही रहे, रहे सदा अभिमान।
गावे महिमा हम सदा, झुके कभी मत शान।।
झुके कभी मत शान, वतन है प्यारा न्यारा।
कभी माने ना हार, बने जो चमका तारा।।
बजे शान से गीत, वीर होवे कालजयी।
रहे देश का नाम, सदा हो भारत विजयी।।

10.

डोली

डोली बैठी वो गयी, चली पिया के देश।
डोल नगाडे बज रहे, पाकर के संदेश।।
पाकर के संदेश, लगा हो जैसे मेला।
नाच रहे है देख, खेलते जैसे खेला।।
बहे नदी है धार, बोलती मीठी बोली।
बैठ पेड की छाँव, देखती दुल्हन डोली।।

11.

रचना

रचना सब हैं चाहते, करते सभी प्रयास।
शब्द सागर भरपुर हो, रचना होगी खास।।
रचना होगी खास, छंद रस रचना कविता।
अलंकार अनुप्रास, बहे सागर सी सविता।।
रचना गुल की खास, सीख उर्दू से बचना।
कविमन की है प्यास, लिखे सब अच्छी रचना।।

12.

पानी

पानी संचय सब करो, पानी है अनमोल।
पानी सबको ही मिले, पानी को मत तोल।।
पानी को मत तोल, मिले घर घर सब बोलो।
करो देख उपयोग, पुरा मत टोटी खोलो।।
पानी सबका मान, बोल सब मीठी बानी।
कहती गुल करजोर, रोज ही पीयें पानी।।

13.

विनती

विनती करती है सखी, गोपी नंदन द्वार।
चलती माखन है लिए, मथुरा सरिता पार।।
मथुरा सरिता पार, गागर फूटता सारा।
राधा प्यारी जान, कान्हा भी है प्यारा।।
गोपी राधे नाथ, बसी वही मन मूरती।
कहती गुल करजोरि, साधिका करती विनती।।

14.

भावुक

भावो में जो है बहे, भावुक उसका नाम।
दया प्रेम रख कर चले, भाव भरे हैं राम।।
भाव भरे हैं राम, मिले जो अद्भुत सीता।
राधा कहती श्याम, पढो तुम भगवत गीता।।
रहते हरदम संग, कहीं सपनों में आवो।
जीवन पावन ज्ञान, भक्त डुब जाते भावो।।

15.

आँगन

आँगन सजने है लगे, तुलसी पूजा आज।
हरियाली छायी रहे, सालिक बृंदा साथ।।
सालिक बृंदा साथ, रमा है प्यारी तुलसी।
श्यामा तुलसी खास, सजी है पावन कलसी।।
विष्णुप्रिया सर ताज, संग है उनके साजन।
कहती है गुल आज, पुण्य घर मिलते आँगन।।

16.

गहरा

गहरा नाता है तभी, मिलता सारा प्यार।
सारा जगत सही दिखे, प्रेम मिलते अपार।।
प्रेम मिलते अपार, यही है प्यारी पूँजी।
अंतरमन में राम, जपे राम नाम कूँजी।।
गहरी होती सो वहीं पर मन जो ठहरा।
कहती गुल यह बात, भक्ति हरपल हो गहरा।।

17.

मानव

मानव जागा है कहां, घिरा तमस मन भाव।
जीवन कठोर है बना, रखते घमंड छांव।।
रखते घमंड छांव, छले मन पग-पग साया।
मौसम बदले हाल, सुखी वह जीवन पाया।।
मनुज मन है उदास, करें है प्रयास अभिनव।
कह गुल तुम भी खास, सुखी है जगता मानव।।

18.

धरती

धरती कहती है तुझे, रहना चाहो पास।
सावन मोती है मिले, बारिश मिलती खास।।
बारिस मिलती खास, लगे हैं धरती प्यारी।
देती पृथ्वी खान, धान अरु चावल सारी।।
कानन कटते देख, सभी मनुज मन तडपती।
सुनो लगा तुम कान, अभी है चीखी धरती।।

19.

रास्ते

रास्ते दिखते हैं सहज, होता क्या आसान।
कठिन डगर होता सभी, मानों सब अभियान।।
मानों सब अभियान, दूर ही सब जन रहना।
करो काम निष्काम, कठिन हो चाहे करना।।
कालचक्र बलवान, करो सब ईश्वर वास्ते।
होगी पूरी काम, सफल जो होंगे रास्ते।।

20

छाया

छाया मिलता है यहाँ, मिले जहाँ आशीश।
रखे मान परिवार का, रहे जहाँ गौरीश।।
रहे जहाँ गौरीश, सदा घर वही सजाती।
साथ रहे भगवान, खुशी सभी वह मनाती।।
रखती घर की लाज, रहे मात पितु की साया।
फलते जो दिन रात, मिले नेह घनी छाया।।

21

पंक्षी

पंक्षी उड़ने है गगन, पाने नभ की चाह।
घुमड़ घुमड़ बादल घिरे, कठिन डगर है राह।।
कठिन डगर है राह, सही पथ चलते जाना।
चले समय निर्बाध, राह वह मंजिल पाना।।
सुन सब वह भी बात, रहे है सबकी साक्षी।
कहती गुल यह सार, भेदती नभ को पंक्षी।।

22.

यात्रा

यात्रा धार्मिक जब करें, सावधान तुम खास।
पूजा अर्चना जब करो, भक्ति भाव हो पास।।
भक्ति भाव हो पास, करे नित पूजन अर्चन।
मंदिर देवों देख, भजन अरु करते कीर्तन।।
करे धरा उपकार, कहाँ ये गिनती मात्रा।
कहती गुल है सार, पावन सब करते यात्रा।।

23

आधा

आधा मिलता है तभी, होती पूरे की चाह।
सब कुछ मिलता है कहाँ, करते प्रयास माह।।
करते प्रयास माह, कठिन है रास्ता साथी।
भटकने लगते राह, चले है जैसे हाथी।।
पथिक निहारे राह, ईश है कृष्णा राधा।
कहती गुल है बात, मिले जो फल है आधा।।

24.

बंधन

वंदन करते राम की, हाथ जोड़कर मंत्र।
चंदन टीका माथ पे, तिलक करे जो यंत्र।।
तिलक करें जो यंत्र, पुजे जो पंडित भगवन।
दीया सजते थाल, करें जो संध्या सुपुजन।।
बटते प्रसाद हाथ, मिले है बूँदी लड्डुवन।
रखते सबपे आस, करें सब मानव वंदन।।

25.

सहना

सहना भगवन को पड़ा, पग-पग चल वनवास।
सीता वन में भी चली, लक्ष्मण भैया खास।।
लक्ष्मण भैया खास, तीर को रखते तरकश।
धरती कड़क कठोर, चुभे फुल कंकड़ अंतश।।
सीता चलती सोच, भाग्य क्या तुझसे कहना।
माँगी मैंने राम, साथ प्रभु जैसे सहना।।

26.

कहना

कहना माने है सभी, करते आदर मान।
जीवन सच्चा है यहाँ, मिले सभी सम्मान।।
मिले सभी सम्मान, यहाँ सब खुशियाँ बहती।
राधा गोपी संग, सखी जो दिनभर रहती।।
बोली मीठी बात, सभी से मिलकर रहना।
कहती गुल यह सार, सभी का मानो कहना।।

27.

माना

माना सपनों में मिले, भगवन राजा राम।
श्वेत पुष्प पकड़े दिखे, धनुष बाण धर धाम।।
धनुष बाण धर राम, चले जो बन में जाते।
माता सीता साथ, धरा पे पग पग धरते।।
काँटे पत्थर झाड़, बिखरकर चाहे छूना।
कहती सीता सार, सभी ने माता माना।।

28.
बातें

बातें मीठी सब करें, मीठा हो अहसास।
सपने बुनने सब लगे, लगती मंजिल पास।।
लगती मंजिल पास, प्रथम सब चढ़ते सीढी।
कड़वी बातें छोड़, देख खुश पुर्वज पीढ़ी।।
सच्ची-सच्ची बोल, सभी खुश होते जाते।
कहती गुल यह बात, करो सभी अच्छी बातें।।

29.
मीठी

मीठी-मीठी मधुरता, मीठा-मीठा स्वाद।
सर्दी जुखाम की दवा, करे शहद आबाद।।
करें शहद आबाद, रोग सब भगती जाती।
मीठी चटनी सास, सदा से सबको भाती।।
दाल रोटी अरु भात, और जो खाते मुलेठी।
हँसते रहना साथ, बोलते बोली मीठी।।

30.
छोटी

छोटी सी है यह परी, है जो नन्ही जान।
सबेरे सड़कों पर दिखे, करे नाच वह गान।।
करें नाच वह गान, सभी जन देखे जाते।
दाना पानी खोज, ढोल पर जाते गाते।।
करती करतब हैरान, परी पर दिखती नाटी।
रस्सी पकड़े बाँस, दिखें है नटखट छोटी।।

31.
यादें

यादें मीठी तुम रखो, कड़वा देना त्याग।
गुजरे सालों से मिलो, खुशियाँ लेकर भाग।।
खुशियाँ लेकर भाग, खुशी मिली जो समेटे।
जीवन जीओ खास, रखो प्रेम को लपेटे।।
युगों युगों से जीत, वही है जो करते वादे।
धर्म युद्ध की बात, राह पथ रहते यादें।।

32.
रोना

रोना धोना मत करो, करना जानो काम।
जीवन खुशियों से भरा, करना क्यों आराम।।
करना क्यों आराम, लेना मत पंगा दंगा।
सुखद क्षणों को थाम, रहो तुम ऐसा चंगा।।
सागर मोती खोज, मिले जब पत्थर लाना।
चलकर सच्ची राह, थाम प्रभु को तुम गाना।।

33.
पाना

पाना लिखा भाग्य अभी, कर्म करे सब जान।
झूठा वादा जो करें, मिलता फल इंसान।।
मिलता फल इंसान, सही गलत को जानता।
चुनता हटकर राह, कठिन पग है वह धरता।।
कमियाँ लाखों मान, समझकर करते जाना।
मंजिल मिलता जान, लक्ष्य पर चलकर पाना।।

34.

सजना

सुंदर सजना चाहती, रखती सुंदर रूप।
दिखती मोहिनी सुरती, करें श्रृंगार अनुप।।
करें श्रृंगार अनुप, झुकी जो पलकें थामे।
केस जब लहराई, लगी हो ढलती शामें।।
गिरधर है राधेय, मिले है आत्मा अंदर।
राधा मोहन श्याम, रुप अनेक है सुंदर।।

35.

साजन

दिखती रहती वह उसे, करती सुंदर प्यार।
सीता देखी बाग में, राम दिव् अवतार।।
राम दिव्य अवतार, वही करते रावण वध।
करती प्रेम अपार, याद उसे आती अवध।।
व्याकुल देखे नैन, प्रेम की रास्ते तकती।
देखी सीता राम, नगों में साजन दिखती।।

36

उड़ना

पंछी उड़ना जानता, जाहे जाना दूर।
पंख लगा कर जब छुवें, छूकर नभ मशहूर।।
छूकर नभ मशहूर, वही करता मनमानी।
घमंड होता भाव, सोच होती नादानी।।
धीरज रखता साथ, जीता जैसे वह दक्षी।
कहती गुल सब सार, आश रख उडता पंक्षी।।

37

आशा

मोती आशा की रखें, चुनकर सागर धार।
ममता छाया जब मिले, जीवन होता सार।।
जीवन होता सार, कठिन है राहें दिखती।
पगपग चलचल धार, मिलेगी मंजिल लगती।।
एक सुत्र में बाँध, साथ में वही पिरोती।
गहरी सागर थाह, सभी खोजे है मोती।।

38

बाती

बाती डालो तेल में, दीपक संग बिठाय।
दीपक जलने जब लगे, भगवन दीप दिखाय।।
भगवन दीप दिखाय, सजाकर थाली रखना।
रखो पावन प्रसाद, कभी मत जुठन करना।।
मौली धागा बाँध, बंधवा हाथों जाती।
करते मंगल गान, जलाकर दीया बाती।।

39.

पूजा

पूजा भगवन की करें, पत्थर पूजे कोय।
हरिहर मिलते ध्यान से, झूठे फरेब रोय।।
झूठे फरेब रोय, सत्य में बस्ती माता।
लक्ष्मी गौरी पूज, सभी जन प्रसाद पाता।।
पावन पर्वत बैठ, लगे जो आसन गिरजा।
जागे सारी रात, करे सब दुर्गा पूजा।।

40.

थाली

थाली सोने की रखें, चाँदी चम्मच लाय।
भगवन प्रसाद दल लिए, लालच दूर भगाय।।
लालच दूर भगाय, भजन कर माधव मिलते।
रखें सजा कर थाल, मिला जल चंदन मलते।।
लगते चंदन माथ, फूल हार दिया माली।
छोड़ो सारी बात, मिले गरीब को थाली।।

41.

कपडा़

कपड़े पहने जब दिखे, लगता नाटककार।
कान्हा राधा का अदा, करता अभिनय सार।।
करता अभिनय सार, रूप में मोहित होते।
लेता है अवतार, दिखे वे हँसते रोते।।
मोटे कपड़े देख, पहन कर लगते तगड़े।
कहती वह है सार, पहन मत उसके कपड़े।।

42.

मेला

माया मेला है लगा, लगता जग जंजाल।
गुड़िया झूला है झुले, जादू करे कमाल।।
जादू करे कमाल, तभी सब नकली दिखता।
काजू पिस्ता आम, सभी कुछ सस्ता मिलता।।
बना रहा वह चाट, साथ में गुपचुप खाया।
गुल कह सच बात, पड़ो नहीं मोह माया।।

43.

कोना

चारों कोना में रखा, सैनिक प्रहरी शाम।
भयंकर तूफान सा लगा, सभी डरे से जाय।।
सभी डरे से जाय, इसे ना कोई भाता।
रहे उधर सब भाग, डरे है सारी जनता।।
गोली चलती खास, छिपे जो बचे किनारों।
कहती गुल वह सोच, देख वह छिपते चारों।।

44.

करना

करना बातें जब कहीं, सच्ची सच्ची बात।
झूठ बोल बोलें नहीं, सुबह शाम या रात।।
सुबह शाम या रात, झूठ जो बोला रोया।
गुस्सा करता खूब, वही सिर धुन पछताया।।
बदला लेने ठान, गया वह उसको कहना।
कहती गुल यह बात, कभी मत गलती करना।।

45.

जाना

जाना ज्ञानी हैं सभी, शब्दों को आकार।
शब्द बने सागर वहाँ, छंद माँगे अलंकार।।
छंद माँगे अलंकार, रचे जब अच्छी दोहा।
वही चुनता है राह, सफलता जिसने चाहा।।
कांटे चुभते पाथ, राह है कठिन माना।
कहती गुल यह सार, ईश है सबको जाना।।

46.

पायल

बजती पायल है कहीं, छुम छुम छन छन ताल।
नाचे गौरा शिव मिले, दिखे मदन गोपाल।।
दिखे मदन गोपाल, वहीं है सबकी माता।
गौरा नाचे साथ, देख नारद इतराता।।
लक्ष्मी हरिहर संग, गीत है मंगल करती।
आते भगवन पास, तभी है पायल बजती।।

47.

दीपक

जलते दीपक जब रखा, स्मरण करें प्रभु नाम।
अंधकार मिटने लग, बनने लगते काम।।
बनने लगते काम, ध्यान कर वीणा पानी।
विचार पावन राख, मधुर सब बोले वानी।।
करते मंगल गान, वहाँ जो उत्सव मनते।
कहती गुल यह बात, घरों-घर दीपक जलते।।

48.

माला

माला जपना तुम सदा, करना भगवन ध्यान।
श्रद्धा सच्ची जो रखो, मिलता सदैव ज्ञान।।
मिलता सदैव ज्ञान, जाप कर श्याम नित नित।
साधक हनुमत सार, करे तभी राम नित हित।।
राधा कान्हा प्रेम, पिये जगत प्रेम प्याला।
चरण वंदन प्रातः, चढे फुल मोती माला।।

49.

खिलना

खिलना चाहे वह कली, देखती सुरज ओर।
प्रातः उगने रवि लगे, कली मचाती शोर।।
कली मचाती शोर, मिले जो रवि की लाली।
सुंदर कलियाँ देख, मधुप मडराते डाली।।
निकला सूरज भोर, सुबह अलि चाहे मिलना।
कहती गुल सार, सदा खुशियों से खिलना।।

50.

मेरा

मेरा तेरा कुछ नहीं, सबका प्यारा साथ।
मिल कर रहना तुम सदा, देना मालिक हाथ।।
देना मालिक हाथ, ख्याल है रखता सबका।
माया मंत्रों उपचार, करे वह मानव तनका।।
भूखे गरीब देख, लिया है खाना तेरा।
कहती गुल यह बात, कठिन है जीवन मेरा।।

51.

सबका

सबका मालिक एक है, जपते भजते राम।
जीवन खुशियों से लदी, लेते सब हरि नाम।।
लेते सब हरि नाम, वही जग पालन करता।
राधा गोपी का नाम, सभी के संकट हरता।।
मीरा गिरिधर श्याम, जपे सब माला मनका।
गुल कहती वह बात, यहाँ है भगवन सबका।।

52.

तपती

तपती गर्मी आग सी, भास्कर तपता तेज।
झुलसे काया तपन से, कैसे हो परहेज।।
कैसे हो परहेज, काम है सबको करना।
गर्मी धुप बरसात, ओढ सब छतरी रखना।।
लगता पानी प्यास, एक ही बूंदे पीती।
कहती गुल यह बात, ताप भी सिरचढ तपती।।

53.

आगे

आगे बढ़ते वो सदा, करे वही श्रम खास।
चलते बढ़ते ही रहो, सफलता आस पास।।
सफलता आस पास, मेहनत से ही जीना।
गढे वही इतिहास, बहता जिसका पसीना।।
रहो उसी के साथ, वक्त से पहले जागे।
कहती गुल यह बात, सीख तुम रहना आगे।।

54.

चिपका

चिपका डरकर है अभी, डरे वत्स अनजान।
शिकार करता है नहीं, माता कहना मान।।
माता कहना मान, घने है जंगल झाड़ी।
छुपे मिले हैं शेर, कहे सुन पकड़े गाड़ी।।
खोजे शिकार ढेर, देख के छाया लपका।
जीवन दाता जान, आस में बच्चा चिपका।।

55.

सरिता

सरिता पावन है बहे, बहती अपनी धार।
गंगा यमुना है मिले, सरस्वती है सार।।
सरस्वती है सार, उसी की पावन धारा।
नदिया बहती साथ, लिए हैं जीवन सारा।।
गिरता हिमनद धार, रचें हैं कवि भी कविता।
कहती गुल है करजोर, कृषक की पावन सरिता।।

56.

गागर

गागर माटी से बना, माटी पावन मान।
बूंद बूंद पानी भरे, पानी सबकी जान।।
पानी सबकी जान, काम है सबको आता।
माटी पकता आग, घड़ा है सबको भाता।।
सोंधी सोंधी गंद, लगे हैं मीठा आगर।
कहती गुल मुस्काय, रंग रंगीली गागर।।

57.

बिखरी

बिखरी जीवन में दुखी, बिखर रहे संवाद।
दुखी भाव आँखें दिखे, मौन करें फरियाद।।
मौन करे फरियाद, सभी से रिश्ता होती।
नाता है परिवार, सभी संबंधी मोती।।
रिश्ते सब मत छोड़, प्रेम से नाते निखरी।
कहती गुल कर जोर, जोड़ लो जीवन बिखरी।।

58.

धागा

धागा रखती है यही, माला बनती हाथ।
धागा परिचायक वही, छोड़ते नहीं साथ।।
छोड़ते नहीं साथ, रखे हैं बांधे धागा।
मिलकर रहना चाह, वही सब सीखे आगे।।
धागा सहती आप, त्याग कर ज्यादा भागे।
कहती गुल वह बात, वही जो बांधा धागा।।

59.

दुनियाँ

दुनियाँ खुशियों से भरी, जावो इसपे वार।
दुखती आँखें मत रखो, निकलो उससे पार।।
निकलो उससे पार, कठिन है जीवन सारा।
मेहनत कर अथाह, परिणाम होवे न्यारा।।
खुशियाँ मिले अपार, हँसे छोटी मुनियाँ।
कहती गुल है सार, परिवार अपनी दुनियाँ।।

60.

डोरी

रेशम डोरी बांधकर, राखी लेकर हाथ।
उपहार देता रहता, बहना पाता साथ।।
बहना पाता साथ, मानता बढकर माता।
धागे रिश्तें डोर, जानता कच्चा नाता।।
कहती गुल यह सार, निकलती धागा कोसम।
खिलते सभी उपवन, डोर है प्यारी रेशम।।

61.
बोली

बोली मीठी है लगे, बोलो मीठा बात।
कड़वा बोली क्यों कहें, लगत सबको लात।।
लगती सबको लात, होत है शब्दों घायल।
बोलते सभी लोग, करें जो बातें कायल।।
बोली घर की जान, लगे है मधु सी गोली।
भाषा कोमल मान, प्रेम से बोलो बोली।।

62.
आसन

आसन कमला कमल की, बैठी सागर क्षीर।
विष्णु रमा लीला करें, देखे गौरा धीर।।
देखें गौरा धीर, करके नंदी सवारी।
पाहन पूजे लोग, बने हैं मंदिर भारी।।
मिलती सबको जीत, करें तप बैठ सुखासन।
स्वास्थ्य की है चाह, करो सब योगा आसन।।

63.
आतुर

आतुर होना है सही, बनता जल्दी काम।
स्फुर्ति उत्साह जो मिले, मिले यही पैगाम।।
मिले यही पैगाम, चले जो सबकी गाड़ी।
मिले कहाँ आराम, लदे हैं फल से बाड़ी।।
करते मजदूर काम, बने वह श्रमकर चातुर।
रहे सदा सब साथ, मिले जब खुशियाँ आतुर।।

64.

चितवन

चितवन नजरे देखकर, भौंहे तिरछी फेर।
कान्हा मुस्काते फिरे, रखे प्रेम की टेर।।
रखे प्रेम की टेर, लगे जो गोपी प्यारी।
पल-पल पलते प्रेम, लगे है दिल को न्यारी।।
जगती है दिन रात, करे जब राधा स्तवन।
कान्हा है चितचोर, देखते रहते चितवन।।

65.

आभा

आभा मंडल चमकता, गगन चमकते रात।
तारा चमकाते चमक, दिनकर कहते बात।।
दिनकर कहते बात, नित्य कर प्रातः योगा।
करो रोज अभ्यास, गलत क्यों ही जो होगा।।
चँदा जटा में धार, यही भोले की शोभा।
चमके सबके भाग्य, बढ़े हैं सबकी आभा।।

66.

मोहक

मोहक कान्हा है लगे, राधा भाव विभोर।
सीता गीता है गुने, पिया मिले चितचोर।।
पिया मिले चितचोर, देख के प्यारा लगता।
होते नहीं उदास सीख, जो सबको मिलता।।
सावन आते पास, लगे हैं सब सुख दायक।
खुशियाँ मिलती साथ, मिले हैं जीवन मोहक।।

67.

शीतल

शीतल पावन मन रखो, करते क्यों हो क्रोध।
पानी गंगाजल पियो, करें सभी हैं अनुरोध।।
करें सभी है अनुरोध, मिले है जीवन मोती।
करते वह सहयोग, भुखे को बाँटे रोटी।।
पानी है अनमोल, बेच क्यों इसको बोतल।
जीवन पावन सार, रखो मनचंदन शीतल।।

68.

जीता

जीता है वह शान से, रखता दिल है शेर।
माँगा दौलत रामसे, कहीं नहीं हो बैर।।
कहीं नहीं हो बैर, अमन सब चाहे जनता।
वतन शांति संदेश, युवा नव प्रातः लाता।।
चले बदल वह भेष, वही दल बदलू नेता।
कहते जो हैं शान, शेर दिल ही है जीता।।

69.

हारा

हारा मन से है कहीं, जीत या गया हार।
कभी छाले पाँव पड़े, बसता घर संसार।।
बसता घर संसार, मिले जब उसको ऊर्जा।
दिखती है जो द्वार, लगे उसमें कल पुर्जा।।
कर्मों का है सार, चढ़े अहंकार पारा।
कहती है वह बात, गया जो मन से हारा।।

70.

उपवन

उपवन सुंदर है दिखे, फूलों का अंबार।
चंपा गेंदा है खिले, खुशबू का भंडार।।
खुशबू का भंडार, बाग में भौंरें घुमते।
तितली भरी अपार, वहाँ जो सुंदर उड़ते।।
मोह लेता मधुबन, खुशी से नाचे तन-मन।
कहती गुल यह सार, खुशी है मिलते उपवन।।

71.

जीवन

खुशियाँ जीवन में मिले, मिलता रहता प्यार।
दिखे चहकते चेहरे, खिलता वह परिवार।।
खिलता वह परिवार, लगे है दुनियाँ प्यारी।
रहे वही संसार, जहाँ है सबसे न्यारी।।
रहते सब एक साथ, वही है प्यारी दुनियाँ।
कहती गुल यह सार, यहीं पर मिलती खुशियाँ।।

72.

गजरा

गजरा जूही से गुथा, लगता खुशबू फूल।
खुशबू से है वह भरा, लगा नहीं है धूल।।
लगा नहीं है धूल, कली जो ताजी खिलती।
करें वधू श्रृंगार, वही जो सुंदर दिखती।।
पहनी मोती हार, नैन में चमके कजरा।
कहती गुल यह सार, बाँधती बेणी गजरा।।

73.

काजल

काजल नैना है लगे, लगे नैन मत वार।
राधा गोरी जो सजे, सुंदर रुप अपार।।
सुंदर रुप आपार, लोग सब मोहित सारे।
नैन सुरमा धार, दिखे नैना कजरारे।।
मुस्काती वह नार, घिरे केंशों से बादल।
गौर वर्ण राधेय, नैन में सजती काजल।।

74.

कुमकुम

सुंदर नारी जब सजे, करती सोला साज।
रोली कुमकुम जो मिले, रखती है वह लाज।।
रखती है वह लाज, नारी सुंदर दिखती।
करती नारी श्रृंगार, रूप जो प्यारी लगती।।
रुपसी सुंदर साथ, सज धज रहती अंदर।
करती नारी प्यार, मधुर है बोली सुंदर।।

75.

बेणी

बेणी नारी ले सजे, सजती मोती हार।
कोमल सुंदर वो लगे, धरती मुख मुस्कान।।
धरती मुख मुस्कान, लगे जो सुंदर नारी।
सीरत रखना ध्यान, कहे है न्यारी प्यारी।।
भोली भाली नार, पास है ऊँची श्रेणी।
गुल कहती यह सार, दिखे है सुंदर बेणी।।

76.

नारी

नारी साहस से भरी, करती सारे काम।
नारी बेटी कमल सी, दुर्गा राधा नाम।।
दुर्गा राधा नाम, दिव्य है अंबा गौरी।
करते नित गुणगान, भजन करती नित छोरी।।
पूजन करते रोज, करें सब मंगल तैयारी।
नारी है अनमोल, रचे शिव अद्भुत नारी।।

77.

साहस

अबला पीड़ा सह चुकी, बहुत हुआ अब वार।
साहस आँखों में पले, दुःखों का हो हार।।
दुःखों का हो हार, धीर तब मन में रखना।
फैले वहाँ प्रकाश, राह मंजिल को तकना।।
मिले मंजिल शीर्ष, बनी है नारी सबला।
जीवन हुआ उदार, बंद हो कहना अबला।।

78.

पनघट

राधा गगरी में भरे, पानी भरती तीर।
कान्हा पनघट पे खड़े, देखें राधा नीर।।
देखें राधा नीर, मारते कंकड गगरी।
राधा पनघट तीर, देखती पहुँची नगरी।।
फूटा उसका भाग्य, गिरा जो पानी आधा।
कहती राधा खीझ, लगा क्यों कंकड राधा।।

79.

कोयल

कोयल काली है दिखे, दिखती सुँदर चोच।
मीठी गाती मधुरता, बैठी-बैठी सोच।।
बैठी-बैठी सोच, कौआ भी काला दिखता।
गाती है अनमोल, चाँद भी जग की सुनता।।
पिया करें संवाद, तभी मन होता घायल।
करती राधा वार, मधुर सी गाकर कोयल।।

80.

कंगन

कंगन सुहाग चिन्ह है, सजे सुहागन साथ।
खनके कंगन खन खनन, चूड़ी हरि है हाथ।।
चूड़ी हरि है हाथ, पहन पायल छनकाती।
दिखे रूप छवि राम, देख सीता सकुचाती।।
माँगा जीवन साथ, करे सिय गौरी बंधन।
दशरथ नंदन राम, नाम के चूड़ी कंगन।।

81.

ममता

ममता दिल में पले, देती सबको साथ।
माता सबको चाहती, रखती अपने हाथ।।
रखती अपने हाथ, स्नेह अपनापन बाँटे।
माता देती ज्ञान, खीझ से देती चाँटे।।
बाँध रखें परिवार, नमन सब कोई करता।
करती सबको प्यार, सभी पहचाने ममता।।

82.
अंबर

अंबर झुकता है सदा, बारिश देता बूँद।
धरती प्यासी जब लगे, वर्षा होती बंद।।
बर्षा होती बंद, धरा है तडपे प्यासी।
ऊपर आसमाँ देख, धरा की वही उदासी।।
बादल घूमते साथ, गगन पर है नीलाँबर।
भगवन का है वास, जहाँ वो बसते अंबर।।

83.
बाबुल

बाबुल आँगन से जुडे, जुड़ी है सारी बात।
नमन सभी है देहरी, देते हैं सौगात।।
देते हैं सौगात, यही जीवन पूँजी।
मिलकर रहना सार, प्यार की है कुँजी।।
जाना होगा छोड़, लगे है मुझको व्याकुल।
मिले जहाँ वो छाँव, वही घर आँगन बाबुल।।

84.
बिंदी

बिंदी सुंदर रंग है, लगती है वह माथ।
हाथ रंगीन चूड़ियाँ, दिखते सुंदर हाथ।।
दिखते सुंदर हाथ, घरों की नारी शोभा।
मन में जो है बात, वही है कहती आभा।।
दिखती सुंदर नार, बोलती वह है हिंदी।
कहती वह है सार, लगाकर सजती बिंदी।।

85.

झुमका

झुमका लटके कान में, झुले वही दिन रात।
गोरी सुंदर वह दिखे, दर्पण देखें सात।।
दर्पण   देखें   सात, मूँद आँखें मुस्काती।
कहती वह है बात, पिया से है सरमाती।।
छुपाती वही कान, लगाती है वह ठुमका।
मन में है खुशी अपार,पहनी है वह झुमका।।

86.

कविता

कविता कवि की भावना, भावों में है जान।
जीवन उल्लेख सहसा, वही करे गुणगान।।
वही   करे   गुणगान, रचते सुंदर रचना।
आते भाव महान, सृजन है उनका सपना।।
फैले जहाँ प्रकाश, जहाँ पहुँचे है सविता।
देते बहुत उजास, वही कवियों की कविता।।

87.

बहना

बहना प्यारी   वो लगे, भाई की है   जान।
राखी बाँधे   वो यहाँ, करते   सब सम्मान।।
करते सब सम्मान, प्रेम   धागे सब   बँधते।
रखना सबका ध्यान, एक ही मिलकर रहते।।
करते सभी दुलार, माँगती   है   वह   गहना।
करती प्यारी बात,   लाडली   लगती   बहना।।

88.

आंचल

ममता आँचल में छुपे, मिलता सबको छाँव।
पापा सागर सा लगे, लगता भगवन ठाँव।।
लगता भगवन ठाँव, मिले है जैसे छाया।
माता करती प्यार, खुशी से वह मुस्काया।।
मिले संकट हजार, हरे वह अपनी क्षमता।
माता रखती चाह, छाँव जो मिलते ममता।।

89.

सैनिक

सैनिक सीमा पर खड़े, डटे रहे दिन रात।
भारत माता के लिए, सहते गर्मी बरसात।।
सहते गर्मी बरसात, वतन का करते रक्षा।
भारत मात महान, सभी है लेते दीक्षा।।
सैनिक सीमा पार, मोल ले खतरा दैनिक।
डटे रहे ये वीर, भारती के हैं सैनिक।।

90.

सखियाँ

सखियाँ पनघट में मिले, प्रीत सुनाती गीत।
दिखे सजना नीर में, बजे वहाँ संगीत।।
बजे वहाँ संगीत, मगन धुन चलती गाती।
पायल की झंकार, मधुर है गीत सुनाती।।
मिले जहाँ मनमीत, चुराती है यह अँखियाँ।
कहती मन की बात, छेड़ती है जब सखियाँ।।

91.

पीहर

पीहर देती है खुशी, बसे वहाँ हो भगवान।
मात-पिता भाई बहन, करते सब सम्मान।।
करते सब सम्मान, मायका देती खुशियाँ।
करती भाभी प्रेम, सदा रखे नेह अँखियाँ।।
देते नित आशीष, दिये वो चाँदी जेहर।
आती सब की याद, लगे हमें मीत पीहर।।

92.

कुनबा

कुनबा रहते हैं सभी, रहे सभी परिवार।
मात-पिता सभी रहते, करे प्रेम सब प्यार।।
करे प्रेम सब प्यार, मिले जो सबको सुविधा।
रहते सब संस्कार, हटे सब सारी बाधा।।
सैर सपाटे साथ, सभी खाते जो ढाबा।
रहे साथ वें लोग, वहीं सब मिलकर कुनबा।।

93.

चंदन

चंदन लगते माथ पे, खुशबू देते थाल।
गंगा जल में जो मिले, पावन होते भाल।।
पावन होते भाल, सदा है पवित्र अर्पण।
चरणों में है माथ, भाव है करें समर्पण।।
सभी जोड़कर हाथ, लोग करते हैं वंदन।
देखे भगवन भाल, दिखे है सुंदर चंदन।।

94.

थोड़ा

थोड़ा मौका जो मिले, रहो सदा खुशहाल।
ज्यादा माँगे वो जहाँ, करे लोभ बेहाल।।
करे लोभ बेहाल, खोखला करता दीमक।
बाहर दुनिया खास, खींचते सबको चकमक।।
पैसे बचते चार, कणों को जिसने जोड़ा।
कहती गुल यह बात, खुशी हो थोड़ा थोड़ा।।

95.

पुरा

मिलता दौलत हो, पुरा रहे सदा धनवान।
मिले सुखद जीवन उसे, धन्य करे भगवान।।
धन्य करे भगवान, मिले जो भगवत छाया।
जीवन का है ज्ञान, बसे है लालच माया।।
रहे सदा खुशहाल, पढे नित भगवत गीता।
कहती गुल यह बात, ध्यान से ही सुख मिलता।।

96.

सपना

सपना देखे हम सभी, देखे सारी रात।
मंजिल पाना है हमें, मिलती हो सौगात।।
मिलती हो सौगात, रहें हम मिलकर लगकर।
मुकाम की है बात, चढ़े जो सीढ़ी बढ़कर।।
पकड़े सच्ची राह, सोचकर पग जो रखना।
कहती गुल यह बात, पुरा हो सारा सपना।।

97.

अंकुश

अंकुश रखना मोह पर, रखना नित नित ध्यान।
माया सबसे है बड़ी, जाने सकल जहान।।
जाने सकल जहान, पड़े हैं सब पर छाया।
माने सब यह बात, जगत पर व्यापक माया।।
हरे पीर जब राम, मोह क्यों रहे निरंकुश।
मर्यादा का धाम, रखे जो मन पर अंकुश।।

98.

महाशिवरात्रि

माता गौरा जप करें, पाई भोलेनाथ।
गरल कंठ जो विष धरे, नीलकंठ शिवनाथ।।
नीलकंठ शिवनाथ, पूजे शिव सहित पार्वती।
भूत प्रेत है संग, नाच सब रहे बराती।।
पावन दिन है आज, लेते फेरे विधाता।
चले संग है चाँद, दिखे अति सुंदर माता।।

99.

लज्जा

लज्जा आती है नहीं, चले सवार अनेक।
बीबी बच्चे हैं लिये, साथ रखे न विवेक।।
साथ रखे न विवेक, करे है खींचा तानी।
नियम रखते ताक, सभी है बनते ज्ञानी।।
जल्दी रखते चाल, सड़क पर पीते माजा।
कहती गुल यह बात, रखो तो थोड़ी लज्जा।।

100.

चूड़ी

चूड़ी खनकाती फिरे, दुल्हन माँगे प्यार।
साजन सजनी से मिले, देखे रूप अपार।।
देखें रूप अपार, प्रेम सा गहरा सागर।
दुल्हन पहनी हार, लदी है सोने आगर।।
साजन देता साथ, बना रहे युगल जोड़ी।
सजनी सुँदर हाथ, चमकते चमचम चूड़ी।।

धनेश्वरी सोनी 'गुल'
बिलासपुर छ.ग.
9424155585

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

नाम- **श्रीमती धनेश्वरी सोनी 'गुल'**

पति- श्री एस के सोनी

जन्मतिथि- ११ जुन

शिक्षा- बी.एस सी., एम .ए. हिंदी

व्यवसाय- गृहिणी, रचनाकार, कवयित्री

पता- लिंक रोड बिलासपुर, छ.ग.

मोबाइल- ६४२४१५५५८५

प्रकाशन- दो साझा संकलन (बिलासपुर एवं रायपुर), किरण दूत रायगढ़ अखबार में नियमित कविताओं का प्रकाशन, खबर गंगा अखबार मे नियमित प्रकाशन, कविता चौराह, दैनिक भास्कर मे प्रति माह संगवारी मे आलेख प्रकाशित होता है। आकाशवाणी बिलासपुर में महिला जगत मे सस्वर कविता प्रसारित।

सम्मान- १. कृति एवं कला साहित्यिक सीपत द्वारा 'सारस्वत सम्मान', २. बिलासा 'दोहा विशारद सम्मान', ३. 'श्रेष्ठ लघु कथा सृजक सम्मान', ४. वक्ता मंच रायपुर द्वारा 'कलमकार सम्मान २०२०', ५. कविता चौराहे मुंगेली जिला में प्रदेश स्तरीय पटल में 'कविता सम्मान', ६. ए.सी.सी.एल. में हिंदी दिवस पर विशिष्ट प्रवक्ता सम्मान, ७. रायपुर में २०२० बीणापाणी सम्मान, ८. रायपुर में २०२० चाणक्य सम्मान, ९. साहित्य साधना सम्मान, १०. 'दोहा रत्न' शिवशक्ति अवध, ११. 'साहित्य सूर्य सम्मान' शिव शक्ति अवध, १२. अर्णव कलश से दोहा विशारद, १३. नीरज शब्द शिल्पी सम्मान २०२०

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-236-4

मूल्य 90/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/